हिन्दी में कम्प्यूटर की भूमिका

मुख्य संपादक
डॉ. विजय शर्मा

संरक्षक
डॉ. राजेन्द्र सिंह

संपादक
डॉ. लीना गोयल
डॉ. गिरधर गोपाल

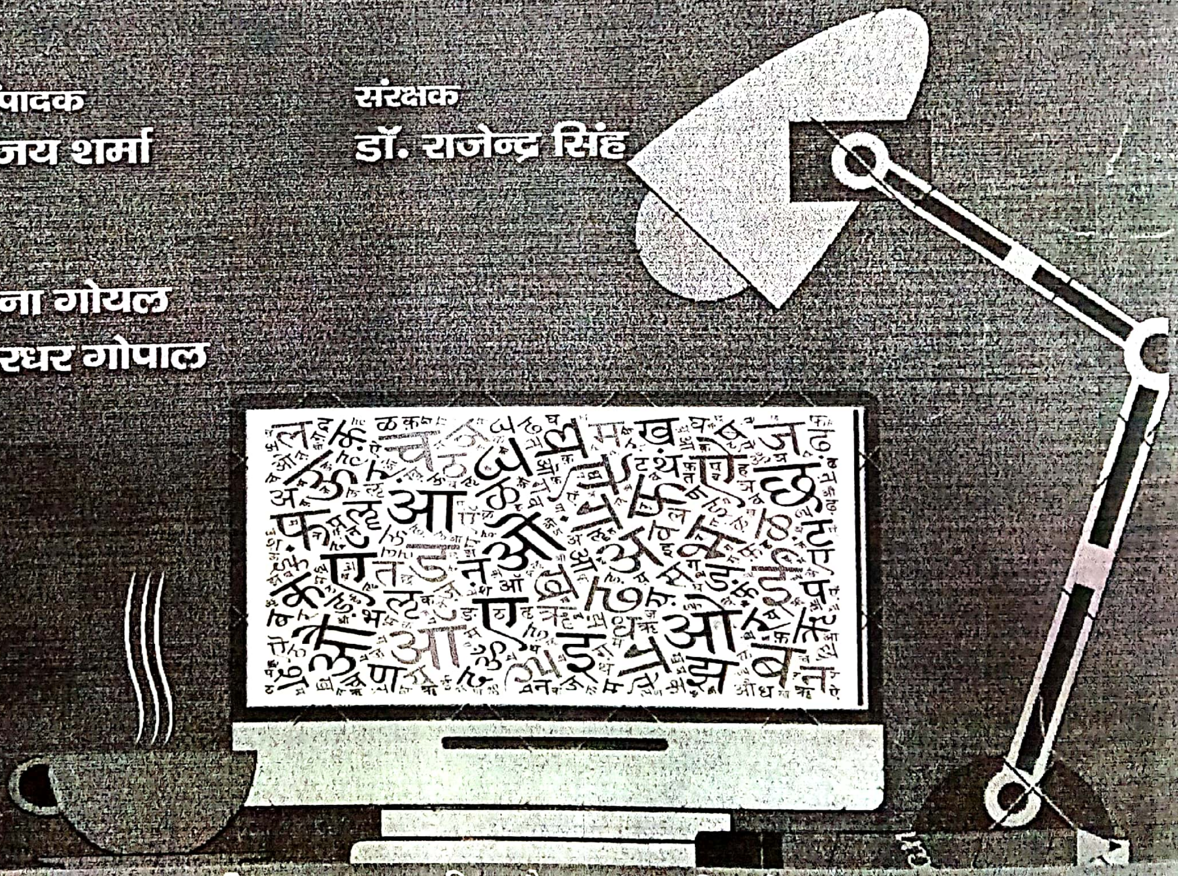

निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय का सूल।

FIRM IN FAITH & LARGE IN HEART
S.D. COLLEGE AMBALA

सनातन धर्म कॉलेज
अम्बाला छावनी

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमाणिका

	प्रस्तावना	(i)
	आशीर्वचन	(ii)
	सम्बोधन	(iii)
	मुख्य वक्तव्य	(iv)
	ीत वक्तव्य	(v)
	अध्यक्षीय वक्तव्य	(vi)
	सम्पादकीय	(viii)
	कृतज्ञता ज्ञापन	(xi)
1.	संगीत शिक्षण के प्रचार–प्रसार में प्रौद्योगिकी की भूमिका डॉ. परमजीत कौर	1
2.	हिन्दी भाषा के विकास के लिए कम्प्यूटर एक प्रभावी एवं आवश्यक माध्यम डॉ. सीमा सिंह	3
	ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में हिन्दी एवं कंप्यूटर का महत्व सरयू शर्मा	7
5.	वैश्विक स्तर पर हिन्दी साहित्य डॉ. संजीत	9
	वैश्वीकरण : मीडिया और हिन्दी डॉ० अनीता रानी	11
8.	हिंदी में रोजगार सृजन के अवसर प्रोफेसर मधु सिंगला	13
	वैश्विक : हिन्दी भाषा व मीडिया अनिल	18
10.	The Impact Of Computer Music Technology On Music Production Dr. Swati Sharma	22
11.	वैश्वीकरण के युग में हिंदी भाषा की प्रसांगिकता सरताज सिंह	25
12.	हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में मीडिया का योगदान पूजा रानी	30
13.	सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न स्तर एवं हिंदी भाषा रजिंदर कौर	33
14.	हिन्दी भाषा शिक्षण में कम्प्यूटर की उपयोगिता संजीव कुमार	37
15.	हिंदी अनुसंधान और सूचना प्रौद्योगिकी संभावनाएं और सीमाएं डॉ. रितु गुप्ता	39

Scanned with OKEN Scanner

16. हिन्दी के शिक्षण और प्रचार-प्रसार में कंप्यूटर की भूमिका
डॉ. सुमन देवी — 44

17. हिन्दी शिक्षण में सूचना तकनीकी की उपयोगिता
डॉ. नरेन्द्र कुमार कौशिक — 47

18. सूचना प्रौद्योगिक और हिन्दी
डॉ. अंजू शर्मा — 50

19. हिन्दी-भाषा शिक्षण में कंप्यूटर की भूमिका
डॉ. मनोज कुमार — 53

20. संचार तंत्र के सशक्तिकरण में हिन्दी की भूमिका
डॉ. हरि ओम फुलिया — 55

21. हिंदी भाषा और ई-शिक्षा
डॉ लीना गोयल — 63

22. सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी भाषा का बढ़ता वर्चस्व
डॉ0 गीतू खन्ना — 65

23. कंप्यूटर के बढ़ते प्रयोग में हिंदी भाषा की प्रासंगिकता
विनोद प्रकाश — 68

24. हिंदी भाषा के विद्यार्थियों के लिए रोजगार के अवसर
डॉ. निर्मल सिंह — 72

25. हिंदी भाषा में संचार क्षेत्रा की भूमिका
डॉ. सी. मोहना — 75

26. अन्य भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद की समस्याएं तथा प्रौद्यौगिकी की भूमिका
श्रीमती नीरू ठाकुर — 79

27. ओडियो रिकॉर्डिंग में कंप्यूटर की भूमिका
डॉ विनय गोयल, डॉ मधु शर्मा — 82

28. संचार तंत्र के सशक्तिकरण में हिंदी की भूमिका
अनिल कुमार यादव — 85

29. हिंदी का वैशिष्ट्य
डॉ मूर्ति मलिक — 89

30. मशीनी अनुवाद और हिन्दी
कुलदीप कुमार, सुनील कुमार — 92

31. कम्प्यूटर : प्रौद्योगिकी की चुनौतियाँ और अवसर
डॉ सन्दीप कुमार — 94

32. पत्रकारिता और हिन्दी साहित्य
डॉ मन्जु तोमर — 99

33. वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा : एक अनुशीलन
डॉ. दीपक कुमार — 102

34. वैश्वीकरण : मीडिया और हिन्दी साहित्य
डॉ. विक्रम सिंह — 106

35. Role Of Computers And Information Technology In Propagation Of Hindi Language
Garima Mann — 110

36. हिंदी में कंप्यूटर की भूमिका
कविता रानी — 117

Scanned with OKEN Scanner

वैश्वीकरण : मीडिया और हिन्दी डॉ अंजु बाला	124
वैश्वीकरण : मीडिया और हिन्दी सरला कुमारी	126
''हिन्दी के शिक्षण व प्रचार-प्रसार में कम्पयूटर की भूमिका'' शिबा मिरेजा	129
Rising Impact of Hindi Language on Internet Sites Ms. Shaina, Dr. Ruchi Sharma, Dr. Mandeep Kaur	133
Role of Computer in Rising Popularity of Hindi Language Newspapers in India Dr. Sagarika Dash	138
Journey Of Machine Translators And Google Translator Dr. Minakshi Gupta, Dr. Poonam Rani	144
Artificial Intelligence Devices and Hindi Language Meenakshi Sharma	156
Softwares for Hindi- Hindi eTools Ms. Priyanka	158
हिंदी की अन्तर्राष्ट्रीय स्वीकार्यता डॉ अनीश	163
अन्तर्जाल (इंटरनेट) पर हिन्दी प्रयोग को बढ़ावा ऋतु वर्मा	167
बैंकिंग कारोबार में हिंदी- अपेक्षाएँ और वास्तविकता अनिता बिन्दल	170
Role of Computer in Hindi Shikha Verma[1], Rashi Tanwar[2], and Shiwani Soni[3]	173
वैश्विक स्तर पर हिन्दी का साहित्य हिंदी का वैश्विक स्वरूप: आवश्यकता डॉ. आशु फुल्ल	176
हिन्दी का वैशिष्टय डॉ. मनजीत कौर	181

वैश्वीकरण : मीडिया और हिन्दी

डॉ अंजु बाला
असिस्टेंट प्रोफेसर
गुरु नानक गर्ल्स कॉलेज, यमुनानगर

शोध पत्र का सारांश-वैश्वीकरण के दौर में प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का महत्त्व दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया लोकतंत्र के प्रहरी हैं तथा साथ ही जन-जन तक अपनी आवाज पहुंचाने के लिए सशक्त माध्यम भी हैं। हिंदी भाषा धीरे-धीर विज्ञापनी दुनिया और मीडिया के माध्यम से वैश्वीकरण का रूप धारण कर रही है। विश्व में हिन्दी मीडिया का अर्थ ऐसे मीडिया से हुआ जिसका संचालन, प्रकाशन और प्रसारण विदेशों से हो रहा है। पत्रकारिता का मूल उद्देश्य जनसाधारण को सूचना देकर संकट के समय सामाजिक दायित्व के प्रति जागरूक करना है।

बीज शब्द- प्रिंटमीडिया, वैश्वीकरण, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, हिन्दी पत्रकारिता, प्रवासी भारतीय, प्रसारण, रेडियो,पत्र-पत्रिकाएं, सभ्यता, संस्कृति।

शोध पत्र का विस्तार-

आज विश्व में हिन्दी का प्रचार प्रसार काफी बढ़ चुका है। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार विश्व में लगभग 500 मिलियन लोग हिन्दी भाषा का प्रयोग करते हैं। आज हिन्दी दुनिया की सबसे, ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में से चौथे स्थान पर है। नेपाल, फीजी, मॉरीशस, पाकिस्तान, बांग्लादेश, अमेरिका, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, सिंगापुर आदि अनेक देश हैं जहां हिंदीभाषा-भाषी लोग बहुत अधिक संख्या में है। भारतीय मूल के लोग दुनिया के हर कोने में बसे हैं। भारत के कुछ लोग जो रोजगार के कारण या किसी और कारण से विदेशों में बस गए है वो प्रवासी भारतीय कहलाते हैं। वे भारतीय संस्कृति से जुड़े हैं। उनकी मातृभाषा हिंदीहै। आज विश्व मेंहिंदी मीडिया का प्रसार बड़े स्तर तक हो चुका है। विश्व के कई देशों में हिंदी में रेडियो प्रसारण भी होता रहा है। भारत के समाचार चैनल भी विश्व के कोने कोने में प्रसारित किए जाते हैं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साथ साथ प्रिंट मीडिया का प्रसार तथा प्रभावभी विदेशों में दिखाई देता है।

जब हम विश्व में हिन्दी मीडिया की बात करते हैं तो उसका अर्थ ऐसे मीडिया से है जिसका संचालन, प्रकाशन और प्रसारण विदेशों से हो रहा है। विदेशी लोग तथा भारतीय मूल के लोग भी इस मीडिया के कामकाज को देख रहे है। इस मीडिया के अंतर्गत बीबीसी (ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग सेंटर) अमेरिकी प्रसारण सेवा वॉइस ऑफ अमेरिका, रूसी रेडियो, रेडियो चीन, एसबीएस ऑस्ट्रेलिया तथा जापानी प्रसारक जैसे मीडिया संगठन शामिल हैं। पिछले कई दशकों से ये विदेशी प्रसारण सेवाएं भारत के लोगों के लिए विदेशों में रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाती रही है लेकिन समय के साथ साथ बदलावआए, रुस और अमेरिका में सरकारी हिंदी रेडियो सेवा बंद हो गई। बीबीसी हिंदी का सारा कामकाज अब नई दिल्ली से हो रहा है। बीबीसी हिंदी के वैश्विक स्वरूप को बदलकर उसका भी भारतीय मीडियाकरण कर दिया गया है।

पत्रकारिता का मूल उद्देश्य जनसाधारण को सूचना देकर संकट के समय सामाजिक दायित्व के प्रति उन्हें जागरूक करना होता है। लेकिन वर्तमान में पत्रकारिता जनहित में न होकर औद्योगिकीकरण की और अग्रसर हो रही है। समाचार के संकलन और प्रकाशन को यथोचित परिवेश में प्रकाशित नही किया जा रहा। कुछ अपवाद हो सकते हैं लेकिन विश्व में मीडिया जगत के अधिकतर संस्थान विज्ञापनों से होने वाली आय के मायाजाल में फंस चुके हैं। अमेरिका, ब्रिटेन, खाड़ीके देशों से लेकर सभी देशों में प्रवासी हिंदी पत्रकारिता के नाम परसी पत्रकारिता चल रही है जो पत्रकारिता के उद्देश्यो और मूल्यों से परे है।

विदेशों में हिंदी मीडिया के नाम पर बॉलीवुड पर आधारित मनोरंजन का कारोबार चल रहा है। अरब देशों से लेकर ऑस्ट्रेलिया तक एफ.एम. और ऑनलाइन रडियो स्टेशन चल रहे हैं जिन पर हिंदी फिल्मी गानों का प्रसारण होता है तथा मनोरंजन संबंधित कार्यक्रम प्रस्तुत किए जातेहैं। ऐसे प्रसारणों को पत्रकारिता के दायरे में कदापि नहीं रखा जा सकता।

ISBN: 978-81-954645-0-0
Scanned with OKEN Scanner

कुछ देश ऐसे भी हैं जहां हिंदी भाषी लोगों की संख्या अधिक है, फिर भी हिंदी पत्रकारिता का उतना विकास नहीं हुआ जितना होना चाहिए था। मॉरीशस जैसे देश में जहां हिंदी भाषा का काफी प्रचार प्रसार है वहां हिन्दी का दैनिक समाचार पत्र तक प्रकाशित नहीं होता। यद्यपि न्यूजीलैंड में प्रकाशित 'भारतदर्शन' जैसे कुछ पत्र पत्रिकाएं ऐसे हैं जो इस कोशिश को बनाए हुए हैं पर अभी और प्रयास किए जाने की जरूरत है।

प्रवासी हिंदी पत्रकारिता के नाम पर प्रवासी हिंदी साहित्य का विकास ही कहीं अधिक हुआ है। विदेशों में बसे बहुत से पत्रकार और साहित्यकार ऐसे हैं जिन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं-कहानी, कविता, निबंध उपन्यास, जीवनी तथा यात्रा साहित्य के माध्यम से विदेशों में हिन्दी को समृद्ध किया। इसके लिए उन्होंने इंटरनेट को माध्यम बनाया और इस प्रकार उन्होंने अपने देश की सभ्यता और संस्कृति को सात समुंदर पार भी जीवित रखा।

वर्षो पहले अपना देश छोड़कर विभिन्न देशों में रोजगार के लिए गये भारतीय लोगों के लिए अपना सुख-दुख बांटने के लिए हिंदी भाषा ही एक बड़ा साधन थी जिसमे इन्होंने अपने विचारों का आदान प्रदान करने के लिए अनेक पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन किया। औरतो और 1935 में फीजी में 'शान्तिदूत' नाम से प्रकाशित अखबार का उद्देश्य भारतीयों को पूरी दुनिया की खबरों की जानकारी देना था। 85 साल से भी ज्यादा समय हो जाने पर भी यह पत्र आज भी भारतीय मूल के लोगों के हितों की रक्षा में संलग्न है। इस पत्र के संपादक श्री गुरुदयाल शर्मा जी हुए हैं। पिछले कुछ वर्षो से यह शांति दूत नामक अखबार भारतीय समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों का आइना बन गया है। इस अखबार का प्रसार फीजी से ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड तक है। फीजी में हिंदी शिक्षण और हिंदी के प्रचार प्रसार में इस समाचार पत्र की काफी भूमिका है।

विदेशों में बसे अधिकतर प्रवासियों के कामकाज और रोजी रोटी की भाषा अंग्रेजी है। प्रवासी भारतीयों के हिंदी के प्रति लगाव के कारण वो आर्थिक नुकसान सहकार भी विदेशों में हिंदी मीडिया से जुड़ेहैं। हिंदी की सेवा में उनका योगदान भुलाया नहीं जा सकता। विदेशों में होने वाले प्रसारणों से भले ही बहुत से लोग जुड़े हो लेकिन पत्रकारिता के तौर पर नही।

ऑस्ट्रेलिया से प्रकाशित होने वाले 'साउथ एशिया टाइम्स' और 'दटाइम्स' का फोकस भारत पर तो होता है और वे प्रवासी भारतीयों के हितों पर ध्यान भी देते हैं पर इनका प्रकाशन अंग्रेजी में ही होता है क्योंकि ये हिन्दी में उनके लिए संभव नहीं क्योंकि उन्होंने अपनी सरकार तथा स्थानीय प्रशासन से संवाद भी बनाना होता है। अगर ये पहल हिंदी भाषा में की जाये तभी वो हिंदी भाषा भाषी लोगों के अधिक करीब हो सकेंगे।

21वी सदी में प्रवासी हिंदी पत्रकारिता कोई विशेष स्थान नहीं बना सकी। विश्व में हिंदी भाषा का विकास तो हुआ है पर इन साहित्यकारों ने यदि पत्रकारिता के क्षेत्र में कुछ और विकास करने के लिये कदम बढ़ाये होते तो स्थिति कुछ और ही होती। दुनियाभर में प्रवासी भारतीयों को आपस में जोड़ने तथा उनके हितों की रक्षा करने में भी सफलता मिलती। भारत के मीडिया संगठनों ने भी प्रवासी भारतीयों तक पहुंचने और जुड़ने की कोशिश नही की। हाँ अगर दक्षिण भारतीय पत्र पत्रिकाओं की बात कर तो उन्होंने फिर भी सकारात्मक प्रयास किए हैं। 'मलयालामनोरमा' जैसी कई भारतीय पत्रिकाओं के संस्करण अरब देशों में छपते हैं। यदि हम सही अर्थो में विश्व के विभिन्न देशों में हिंदी पत्रकारिता का विकास चाहते हैं तो देश के किसी हिंदी समाचार पत्र के समूह की ओर से विदेशों से संस्करण प्रकाशित करवाने के लिए प्रयास किये जाने चाहिए तथा सरकारी स्तर पर भी सूचना माध्यमों के लिए जो संवाददाता रखे जाते है उन्हें अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी में भी कार्य करने के निर्देश दिए जाएं।

संदर्भ स्त्रोतः-

1. http://www.hindi-bharat.com/2012/Hindi-an-international-language.html
2.http://www.rachnakar.org
3. http://ehindiinfiji.blogspot.in

ISBN: 978-81-954645-0-0

Scanned with OKEN Scanner